भारतीय ज्ञान–परम्परा में श्री अरविंद का योगदान

अभिलाष,

शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध–सार

भारतीय ज्ञान–परम्परा केवल बौद्धिक जानकारी का संग्रह नहीं, बल्कि आत्मिक अनुभूति, चेतना–विकास और मानव–कल्याण की समग्र प्रक्रिया है। इस परम्परा में ज्ञान को जीवित और क्रियाशील शक्ति माना गया है। श्री अरविन्द घोष ने इसी जीवंत परम्परा को आधुनिक युग के संदर्भ में पुनः परिभाषित किया। उन्होंने बताया कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह बुद्धि और आत्मा की गहराई से जुड़ा हो। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति यूनानियों की तुलना में अधिक सूक्ष्म, व्यापक और गहन रही है। उन्होंने चेताया कि यदि ज्ञान का उपयोग न किया जाए, तो वह मृत भार बनकर समाज को दबा देता है। श्री अरविन्द का "समग्र योग" (प्दजमहतंस ल्वहं) जीवन के हर स्तर – आत्मा, मन, शरीर और समाज – के दिव्य रूपांतरण की दिशा में प्रयत्नशील है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करते हुए शिक्षा, चेतना–विकास और सामाजिक परिवर्तन के बीच गहरा संबंध स्थापित किया। उनका मत था कि अतीत का अध्ययन कर उससे उपयोगी तत्त्व ग्रहण कर, आधुनिक पश्चिमी ज्ञान के साथ उसका समन्वय करना ही भारत के नव–जागरण की कुंजी है। इस प्रकार श्री अरविन्द ने भारतीय ज्ञान–परम्परा को केवल स्मृति का विषय नहीं, बल्कि भविष्य–निर्माण की प्रेरक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया।

बीज शब्द : *भारतीय ज्ञान–परम्परा, श्री अरविन्द, समग्र योग, चेतना–विकास, भारतीय संस्कृति, वेद–उपनिषद्, आधुनिक शिक्षा, राष्ट्रवाद, ज्ञान एवं बुद्धि, भारतीय दर्शन*

भारतीय ज्ञान परंपरा धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला और शिक्षा का एक समृद्ध संगम है, जिसने न केवल भारत बल्कि पूरी मानवता को ज्ञान और जीवन का मार्ग दिखाया। भारतीय ज्ञान परंपरा की शुरुआत **वैदिक काल** से मानी जाती है। इस समय चार वेद–**ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद** और **अथर्ववेद** की रचना हुई, जिनमें धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और सामाजिक ज्ञान का संग्रह है। वेदों के अध्ययन के लिए **वेदांगों** की रचना की गई, जिनकी छह शाखाएँ हैं–**शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद** और **ज्योतिष**। उत्तर वैदिक काल में **ब्राह्मण, आरण्यक** और **उपनिषद** ग्रंथों की रचना हुई। उपनिषदों ने आत्मा, ब्रह्म, कर्म, माया और मोक्ष जैसे गूढ़ विषयों पर विचार किया। शिक्षा का प्रसार **गुरुकुल प्रणाली** के माध्यम से हुआ, जहाँ विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर ज्ञान प्राप्त करते थे। भारतीय महाकाव्य **रामायण** और **महाभारत** न केवल धार्मिक ग्रंथ हैं बल्कि इनमें समाज, संस्कृति और नैतिकता का गहरा चित्रण मिलता है। **भगवद्गीता** ने दर्शन और योग को नई दिशा दी। **पुराणों** ने भारत की संस्कृति, इतिहास और आस्था को संरक्षित किया। प्राचीन भारत में **गणित, ज्योतिष** और **चिकित्सा विज्ञान** का उच्च विकास हुआ। **आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त** और **भास्कराचार्य** जैसे विद्वानों ने शून्य, दशमलव, त्रिकोणमिति और बीजगणित में योगदान दिया।

चरक संहिता और **सुश्रुत संहिता** जैसे ग्रंथों ने **आयुर्वेद** को विकसित किया, जो आज भी चिकित्सा का प्रमुख आधार है।

शिक्षा के क्षेत्र में **तक्षशिला** और **नालंदा विश्वविद्यालय** जैसे केंद्र विश्वविख्यात थे। साहित्य और कला के क्षेत्र में **भरत मुनि का नाट्यशास्त्र,** तथा **कालिदास, बाणभट्ट** और **जयदेव** जैसे कवियों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया। भारतीय दर्शन में छह प्रमुख **षड्दर्शन** हैं–**सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा** और **वेदांत**। साथ ही **जैन, बौद्ध** और **चार्वाक दर्शन** ने भी स्वतंत्र रूप से विचार प्रस्तुत किए।

आधुनिक युग में **श्री अरविन्द घोष** ने भारतीय ज्ञान परंपरा को नई दिशा दी। वे दार्शनिक, योगी, कवि और स्वतंत्रता सेनानी थे। 15 अगस्त 1872 को कोलकाता में जन्मे अरविन्द ने इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की और भारत लौटकर स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए। **"वंदे मातरम"** अखबार के माध्यम से उन्होंने देशभक्ति और स्वतंत्रता का संदेश फैलाया। जेल में रहते हुए उन्होंने ध्यान और साधना से आध्यात्मिक जीवन की ओर कदम बढ़ाया और 'समग्र योग' (Integral Yoga) तथा 'सुप्रमान्य चेतना' (Supramental Consciousness) के विचार विकसित किए।

उनके प्रमुख ग्रंथों में शामिल हैं:

- **The Life Divine** – दर्शन–काव्यात्मक ग्रन्थ, जिसमें चेतना–विकास तथा ब्रह्म–साक्षात्कार की प्रक्रिया प्रस्तुत है।
- **Savitri: A Legend and a Symbol** – महाकाव्यात्मक कृति, जिसमें धार्मिक–दर्शनात्मक एवं आध्यात्मिक अनुभवों को कविता रूप में व्यक्त किया गया है।
- **Foundations of Indian Culture** – भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान–परम्परा के दर्शनात्मक आधार प्रस्तुत करती कृति।

भारतीय ज्ञान–परम्परा : अवधारणा एवं श्री अरविंद की दृष्टि

भारतीय ज्ञान–परम्परा का मूल स्वरूप यह है कि ज्ञान केवल बौद्धिक जानकारी नहीं, बल्कि जीवित अनुभव, आत्मिक–दृष्टि एवं चेतना–विकास का मार्ग है। श्री अरविंद ने इसे निम्नलिखित बिंदुओं में विश्लेषित किया हैरू

- ज्ञान एवं बुद्धि का अंतररू

"There are two allied powers in man; knowledge and wisdom- Knowledge is so much of the truth seen in a distorted medium as the mind arrives at by groping, wisdom what the eye of divine vision sees in the spirit."

अर्थात

मनुष्य में दो सहयोगी शक्तियाँ होती हैं – **ज्ञान और बुद्धि (या प्रज्ञाधविवेक)।**

ज्ञान वह सत्य है, जिसे मन अपनी सीमित और विकृत दृष्टि से खोजते हुए प्राप्त करता है, जबकि **बुद्धि (या प्रज्ञा)** वह है, जिसे आत्मा की **दैवी दृष्टि** आत्मिक स्तर पर स्पष्ट रूप से देखती है।

यहाँ उन्होंने स्पष्ट किया कि सामान्य रूप से जो हम 'ज्ञान' कहते हैं, वह विकृत माध्यम से देखा गया सत्य हो सकता है? जबकि 'बुद्धि' (wisdom) दिव्य दृष्टि–चेतना से प्राप्त है।

भारतीय परम्परा की विशिष्टता

"More high & reaching, subtle, many-sided, curious and profound than the Greek, … possessing all that these had and more, it was the most powerful … of all past human cultures".

अर्थात

''यूनानियों से अधिक व्यापक, सूक्ष्म, बहुआयामी,

जिज्ञासापूर्ण और गहन – उनके पास जो कुछ था और उससे भी अधिक को अपने भीतर समेटे हुए – यह समस्त प्राचीन मानव सभ्यताओं में सबसे **शक्तिशाली** संस्कृति थी।'

यह उद्धरण दर्शाता है कि श्री अरविंद भारत की पुरातन संस्कृति–परम्परा को बहुत उच्च स्थान देते थे और इसे विश्व पटल पर मानने की बात करते थे।

ज्ञान का जीवित स्वरूप

India's Rebirth (1920 में) में उन्होंने लिखा है :

"It knowledge that is wanting? … We Indians, born and bred in a country where Gyana has been stored and accumulated since the race began … bear about in us the inherited gains of many thousands of years … But it is a dead knowledge, a burden under which we are bowed … for this is the nature of all great things that when they are not used or are ill-used, they turn upon the bearer and destroy him." अर्थात

"क्या वास्तव में हमें ज्ञान की कमी है? … हम भारतीय, जो ऐसे देश में जन्मे और पले–बढ़े हैं जहाँ **ज्ञान (ज्ञान/ज्ञान)** मानव जाति के आरंभ से ही संचित और संग्रहीत होता आया है, … अपने भीतर हजारों वर्षों की अर्जित उपलब्धियों की विरासत लेकर चलते हैं। … परंतु यह ज्ञान अब मृतप्राय हो गया है – एक ऐसा **भार**, जिसके नीचे हम झुके हुए हैं। … क्योंकि महान वस्तुओं का स्वभाव ही ऐसा होता है कि जब उनका उपयोग न किया जाए या उनका दुरुपयोग किया जाए, तो वे उसी व्यक्ति पर पलटकर उसे नष्ट कर देती हैं।"

यह विचार हमारे लिए यह संकेत देता है कि ज्ञान को केवल संरक्षित करना पर्याप्त नहीं, बल्कि उसे सक्रिय, प्रगतिशील और उपयोगी बनाना आवश्यक है।

श्री अरविंद का ज्ञान–परम्परा में मुख्य योगदान

श्री अरविंद ने भारतीय ज्ञान–परम्परा को पुनः सजीव करने, उसे नए युग के अनुरूप पुनर्परिभाषित करने तथा वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने में निम्न–प्रकार योगदान दिया है:

1. समग्र योग एवं चैतन्य विकास का सिद्धांत

उन्होंने कहा कि केवल मोक्ष–या विरक्ति–या ज्ञान–ही नहीं लक्ष्य होना चाहिए, बल्कि जीवन को दिव्य जीवन में परिवर्तित करना है – अर्थात् आत्मा, मन, शरीर, समाज–सभी का उत्कर्ष। यह दृष्टिकोण भारतीय योग–परम्परा को मात्र व्यक्तिगत मुक्ति से आगे–सामाजिक–वैश्विक परिवर्तन तक ले गया।

2. भारतीय संस्कृति–परम्परा का पुनर्जीवन

उन्होंने भारतीय ज्ञान–सोच (जैसे वेद, उपनिषद्, योग दर्शन, राष्ट्र–चेतना) को आधुनिक ज्ञान–विज्ञान, सामाजिक–राजनीतिक बदलाव से जोड़ने का प्रयत्न किया। उदाहरण के तौर पर, उन्होंने शिक्षा–विचार में कहा:

"We in India have become so barbarous that we send our children to school with the grossest utilitarian motive … But make the education good, thorough and interesting and the love of knowledge will of itself awake in the mind …"

अर्थात

"हम भारतवासी इतने असभ्य हो गए हैं कि हम अपने बच्चों को स्कूल केवल **स्वार्थपूर्ण लाभ** की भावना से भेजते हैं … परंतु यदि शिक्षा को **उत्तम, गहन** और **रोचक** बना दिया जाए, तो **ज्ञान के प्रति प्रेम** अपने आप ही मन में जाग उठेगा।"

इस प्रकार, उन्होंने शिक्षा की उद्देश्य–परकता, मूल–ज्ञान तथा चरित्र–विकास को जोड़ा।

3. ज्ञान–विकास (Knowledge&Evolution) का दर्शन

श्री अरविंद ने यह माना कि मानव–चेतना निरन्तर विकासशील है, और भारतीय परम्परा में चेतना–विकास का प्रवाह नितांत मौजूद है। उन्होंने कहा–

"The Veda was the beginning of our spiritual knowledge; … The recovery of the perfect truth of the Veda is therefore … a practical necessity for the future of the human race"

इससे यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने ज्ञान–परम्परा को सिर्फ अतीत का धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य–निर्माण का आधार माना।

4. ज्ञान–सदियों को समाज–परिवर्तन से जोड़ना

श्री अरविंद ने यह मत दिया कि ज्ञान–संपदा तभी सार्थक है जब वह सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक परिवर्तन के साधन बने। उन्होंने लेखन में लिखा :

"India needs a great national movement … each man will work for the nation and not for himself or for his caste … Study the past till you know what knowledge you can get from it which you can use in the present and add to it what the West can teach us".

अर्थात

"भारत को एक महान **राष्ट्रीय आंदोलन** की आवश्यकता है … जहाँ प्रत्येक व्यक्ति **अपने या अपनी जाति** के लिए नहीं, बल्कि **राष्ट्र** के लिए कार्य करे … अतीत का अध्ययन करो, जब तक कि तुम यह न समझ लो कि उससे कौन–सा ज्ञान वर्तमान में उपयोगी हो सकता है, और उसमें वह भी जोड़ो जो **पश्चिम** हमें सिखा सकता है।"

यहाँ उन्होंने स्थानीय–परम्परागत और आधुनिक–वैश्विक तत्त्वों के समन्वय की दिशा सुझाई।

श्री अरविंद के ज्ञान–परम्परा संबंधी विचारों को स्वीकार करते समय कुछ चुनौतियाँ और आलोचनाएँ सामने आती हैं। उनका लेखन एवं दर्शन जहाँ गहन एवं व्यापक हैं, वहीं आम पाठक–समूह के लिए जटिल भी हैं। परम्परा–पुनरावलोकन में कुछ ऐसे संस्कार–विचार शामिल हैं जिन्हें सामाजिक–वास्तविकता में लागू करने में कठिनाई होती है। उनका योग–सिद्धांत और चेतना–विकास–दृष्टि अक्सर व्यक्तिगत स्तर पर केंद्रित दी जाती है, जबकि सामाजिक–संसारिक परिवर्तनों की दिशा में व्यावहारिक रूप से कम चर्चा–है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान–परम्परा को पुनर्जीवित, पुनर्परिभाषित और वैश्विक–उद्देश्य–संगत बनाने में श्री अरविंद का अवदान उल्लेखनीय है। उन्होंने ज्ञान को सिर्फ भण्डार नहीं, बल्कि प्रक्रिया, चेतना–विकास और सामाजिक–परिवर्तन का माध्यम माना। उनके उद्धरण हमें यह स्मरण कराते हैं कि "ज्ञान" और "बुद्धि" के बीच अन्तर है, और जीवन को दिव्य रूप देने का उद्देश्य है। श्री अरविन्द घोष का योगदान भारतीय ज्ञान–परम्परा के पुनरुत्थान का प्रतीक है। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि ज्ञान तभी जीवंत रहता है जब वह व्यवहार, चेतना और समाज में क्रियान्वित हो। उनके दर्शन ने यह स्पष्ट किया कि भारतीय परम्परा में विद्यमान आत्मिक दृष्टि को आधुनिक जीवन, शिक्षा और सामाजिक विकास से जोड़ा जा सकता है। उनकी दृष्टि में ज्ञान केवल मोक्ष या व्यक्तिगत उद्धार का साधन नहीं, बल्कि समग्र मानवता के उत्थान का माध्यम है। उन्होंने अतीत और वर्तमान के बीच सेतु बनाते हुए भारतीय संस्कृति को विश्व–दृष्टि प्रदान की। इस प्रकार, श्री अरविन्द भारतीय ज्ञान–परम्परा के ऐसे दार्शनिक हैं जिन्होंने "आत्मा के आलोक" को आधुनिकता की दिशा में प्रवाहित किया और उसे एक सार्वभौमिक, गतिशील और

प्रगतिशील स्वरूप दिया।

आज जब भारतीय ज्ञान–परम्परा पुनः वैश्विक संवाद में खड़ी है (उदाहरण–स्वरूप "भारतीय ज्ञान प्रणाली" (IKS) पहल), तब श्री अरविंद के विचार हमें यह प्रेरणा देते हैं कि हमें अपनी सांस्कृतिक–ज्ञान–परम्परा को गतिशील, समृद्ध और खुला बनाना होगा।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

- श्री अरविन्द, (1994), मानव चक्र पाण्डिचेरीः श्री अरविन्द आश्रम ।
- श्री अरविन्द (1994). श्री अरविन्द अपने विषयों में, पाण्डिचेरी श्री अरविन्द आश्रम।
- रविन्द्र (1994). लातकमल, पाण्डिचेरीः श्री अरविन्द सोसाइटी।
- नवजात (2001), दिव्य शरीर में दिव्य जीवन पाण्डिचेरीः श्री अरविन्द सोसाइटी।
- यागी सुरेश चन्द्र. (2002), अदिति अर्ध वार्षिक प्रस्तुति, मेरठः श्री अरविन्द प्रादेशिक समिति। CR साइटी,
- छोटे नारायण शर्मा, (2002). श्री अरविन्द (सक्षिप्त जीवनी), नई दिल्लीः श्री नवीन बाहरी, दि मदर्स फर्म ।
- कोकिला विद्यावती, (2003) श्री अरविन्द आयाम, पाण्डिचेरीः श्री अरविन्द आश्रम प्रेम ।
- मैत्रा, एस.के. (2004) श्री अरविन्द दर्शन की भूमिका, पाण्डिचेरीः श्री मीरा ट्रस्ट
- Aurobindo, S. (1997). *The Complete Works of Sri Aurobindo* (Vols. 1-36). Sri Aurobindo Ashram Trust.
- Aurobindo, S. (1999). *The Life Divine*. Sri Aurobindo Ashram Publication Department.
- Aurobindo, S. (2000). *Savitri: A Legend and a Symbol*. Sri Aurobindo Ashram Publication Department.
- Heehs, P. (2008). *The Lives of Sri Aurobindo*. Columbia University Press.